



Vandana Malhotra

02 Jun 1977

02:00 PM

Ambala

Model: Web-MyKundli

Order No: 121455001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 02/06/1977
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 14:00:00 घंटे
इष्ट _____: 21:36:22 घटी
स्थान _____: Ambala
राज्य _____: Haryana
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:19:00 उत्तर
रेखांश _____: 76:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:22:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:37:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:08 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:20:03 घंटे
सूर्योदय _____: 05:21:27 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:20:08 घंटे
दिनमान _____: 13:58:41 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 18:08:42 वृष
लग्न के अंश _____: 10:49:02 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: ज्येष्ठा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: साध्य
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मृग
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: यी-यीशा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1899	ज्येष्ठ	12
पंजाबी	संवत : 2034	ज्येष्ठ	20
बंगाली	सन् : 1384	ज्येष्ठ	19
तमिल	संवत : 2034	वैकासी	20
केरल	कोल्लम : 1152	इदवम	19
नेपाली	संवत : 2034	ज्येष्ठ	20
चैत्रादि	संवत : 2034	आषाढ़	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2034	ज्येष्ठ	कृष्ण 1

पंचांग

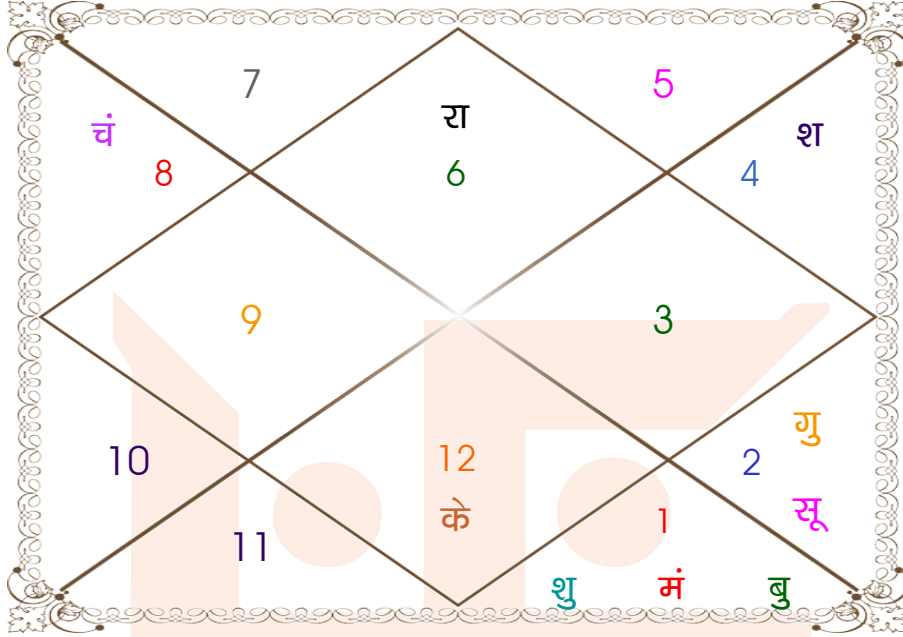
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:09:08
जन्म तिथि _____ : 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:24:38 घंटे
जन्म योग _____ : ज्येष्ठा
सूर्योदय कालीन योग _____ : सिद्ध
योग समाप्ति काल _____ : 08:54:44 घंटे
जन्म योग _____ : साध्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 12:04:16 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 33:53:19
भभोग _____ : 52:24:54
भोग्य दशा काल _____ : बुध 5 वर्ष 11 मा 30 दि

घात चक्र

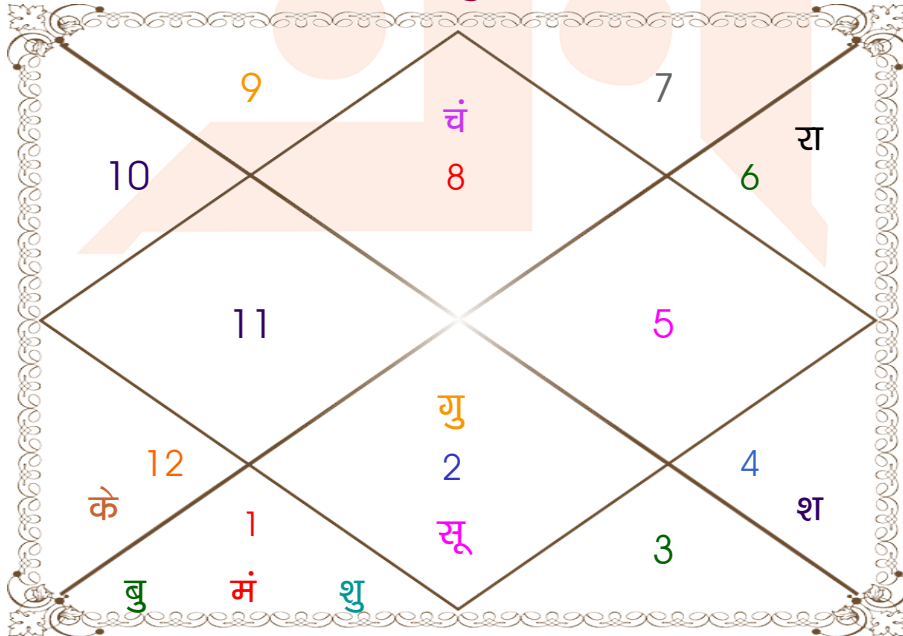
मास _____ : आश्विन
तिथि _____ : 1-6-11
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : रेवती
योग _____ : व्यतिपात
करण _____ : गर
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृश्चिक
सूर्य _____ : मकर
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : कुम्भ
बुध _____ : वृश्चिक
गुरु _____ : मीन
शुक्र _____ : मेष
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : वृष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के	शु मं बु	गु सू	
			श
	चं		रा ल

लग्न कुण्डली

गु सू	शु मं बु	के
श		
ल रा		चं

विंशोत्तरी
बुध 5वर्ष 11मा 30दि
बुध

02/06/1977

02/06/2086

बुध	02/06/1983
केतु	02/06/1990
शुक्र	02/06/2010
सूर्य	02/06/2016
चन्द्र	02/06/2026
मंगल	02/06/2033
राहु	02/06/2051
गुरु	02/06/2067
शनि	02/06/2086

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 9मा 5दि
सिद्धा

08/03/2021

08/03/2028

सिद्धा	18/07/2022
संकटा	06/02/2024
मंगला	17/04/2024
पिंगला	06/09/2024
धान्या	08/04/2025
भामरी	17/01/2026
भद्रिका	07/01/2027
उल्का	08/03/2028

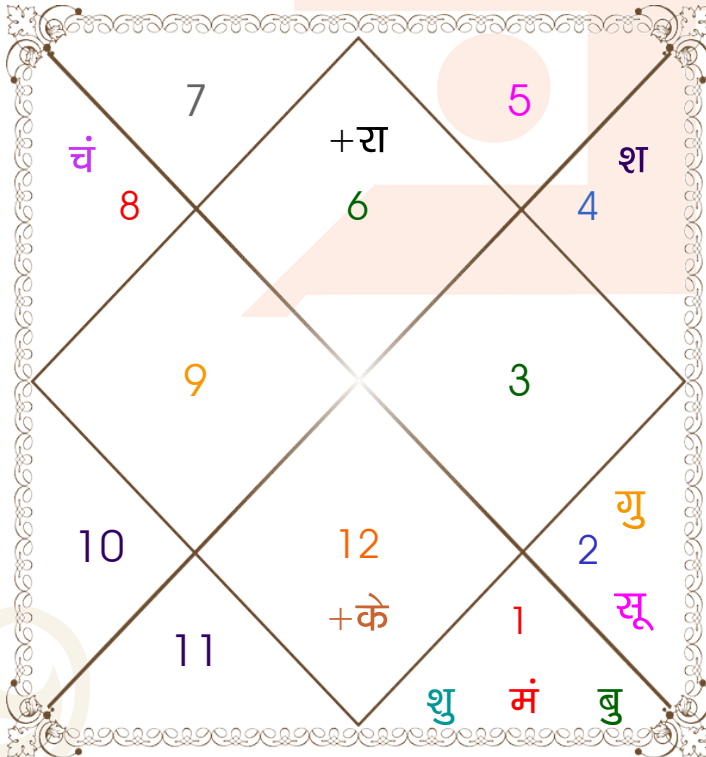
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		कन्या	10:49:02	313:43:33	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	---
सूर्य		वृष	18:08:42	00:57:27	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
चंद्र		वृश्चि	25:17:40	15:15:27	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	नीच राशि
मंगल		मेष	03:38:30	00:44:53	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	सूर्य	मूलत्रिकोण
बुध		मेष	24:12:10	01:14:04	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	बुध	सम राशि
गुरु	अ	वृष	19:37:39	00:13:57	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
शुक्र		मेष	03:05:11	00:50:34	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	सूर्य	सम राशि
शनि		कर्क	18:43:05	00:05:00	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
राहु	व	कन्या	29:46:32	00:06:31	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	मूलत्रिकोण
केतु	व	मीन	29:46:32	00:06:31	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	मूलत्रिकोण
हर्ष	व	तुला	14:55:24	00:01:59	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	---
नेप	व	वृश्चि	21:18:59	00:01:37	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
प्लूटो	व	कन्या	17:57:23	00:00:37	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
दशम भाव		मिथु	11:03:37	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	शनि	--

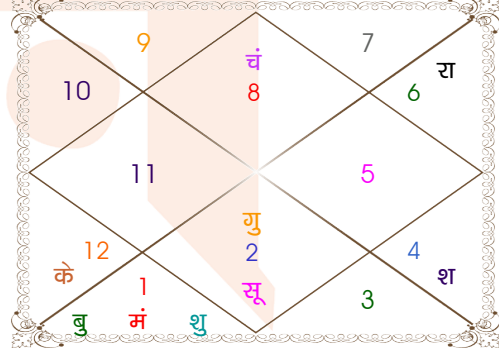
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:36

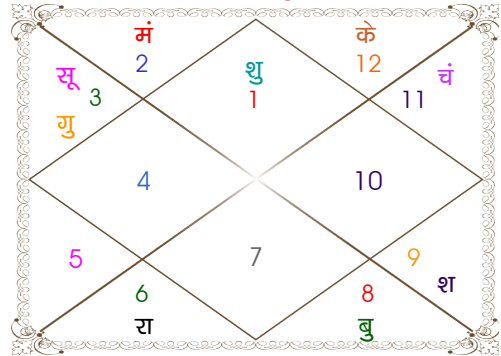
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 25:51:28	कन्या 10:49:02
2	कन्या 25:51:28	तुला 10:53:53
3	तुला 25:56:19	वृश्चिक 10:58:45
4	वृश्चिक 26:01:11	धनु 11:03:37
5	धनु 26:01:11	मकर 10:58:45
6	मकर 25:56:19	कुम्भ 10:53:53
7	कुम्भ 25:51:28	मीन 10:49:02
8	मीन 25:51:28	मेष 10:53:53
9	मेष 25:56:19	वृष 10:58:45
10	वृष 26:01:11	मिथुन 11:03:37
11	मिथुन 26:01:11	कर्क 10:58:45
12	कर्क 25:56:19	सिंह 10:53:53

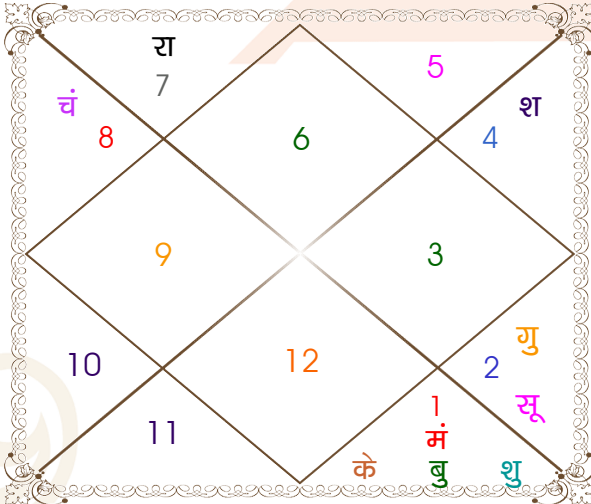
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	10:49:02
2	तुला	08:47:00
3	वृश्चिक	09:16:02
4	धनु	11:03:37
5	मकर	12:53:06
6	कुम्भ	13:17:07
7	मीन	10:49:02
8	मेष	08:47:00
9	वृष	09:16:02
10	मिथुन	11:03:37
11	कर्क	12:53:06
12	सिंह	13:17:07

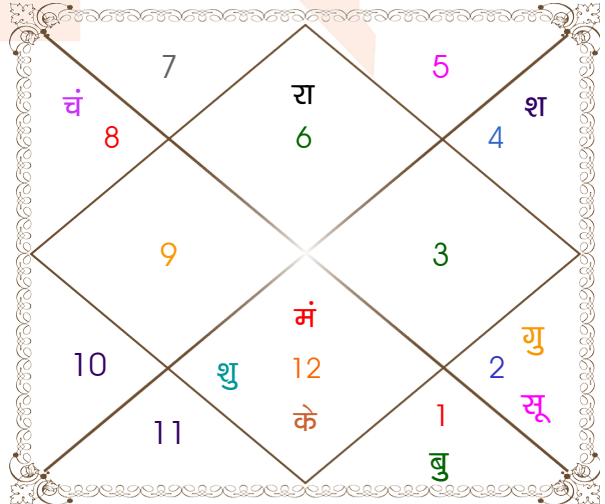
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 5 वर्ष 11 मास 30 दिन

बुध 17 वर्ष 02/06/1977 02/06/1983	केतु 7 वर्ष 02/06/1983 02/06/1990	शुक्र 20 वर्ष 02/06/1990 02/06/2010	सूर्य 6 वर्ष 02/06/2010 02/06/2016	चंद्र 10 वर्ष 02/06/2016 02/06/2026
00/00/0000	केतु 30/10/1983	शुक्र 02/10/1993	सूर्य 20/09/2010	चंद्र 02/04/2017
00/00/0000	शुक्र 29/12/1984	सूर्य 02/10/1994	चंद्र 21/03/2011	मंगल 01/11/2017
00/00/0000	सूर्य 06/05/1985	चंद्र 02/06/1996	मंगल 27/07/2011	राहु 03/05/2019
00/00/0000	चंद्र 05/12/1985	मंगल 02/08/1997	राहु 20/06/2012	गुरु 01/09/2020
00/00/0000	मंगल 03/05/1986	राहु 02/08/2000	गुरु 08/04/2013	शनि 02/04/2022
02/06/1977	राहु 21/05/1987	गुरु 03/04/2003	शनि 21/03/2014	बुध 02/09/2023
राहु 17/06/1978	गुरु 26/04/1988	शनि 02/06/2006	बुध 26/01/2015	केतु 02/04/2024
गुरु 22/09/1980	शनि 05/06/1989	बुध 02/04/2009	केतु 02/06/2015	शुक्र 02/12/2025
शनि 02/06/1983	बुध 02/06/1990	केतु 02/06/2010	शुक्र 02/06/2016	सूर्य 02/06/2026

मंगल 7 वर्ष 02/06/2026 02/06/2033	राहु 18 वर्ष 02/06/2033 02/06/2051	गुरु 16 वर्ष 02/06/2051 02/06/2067	शनि 19 वर्ष 02/06/2067 02/06/2086	बुध 17 वर्ष 02/06/2086 00/00/0000
मंगल 29/10/2026	राहु 13/02/2036	गुरु 21/07/2053	शनि 05/06/2070	बुध 29/10/2088
राहु 17/11/2027	गुरु 09/07/2038	शनि 01/02/2056	बुध 12/02/2073	केतु 26/10/2089
गुरु 23/10/2028	शनि 15/05/2041	बुध 09/05/2058	केतु 24/03/2074	शुक्र 26/08/2092
शनि 02/12/2029	बुध 02/12/2043	केतु 15/04/2059	शुक्र 24/05/2077	सूर्य 02/07/2093
बुध 29/11/2030	केतु 20/12/2044	शुक्र 14/12/2061	सूर्य 06/05/2078	चंद्र 02/12/2094
केतु 27/04/2031	शुक्र 20/12/2047	सूर्य 02/10/2062	चंद्र 05/12/2079	मंगल 29/11/2095
शुक्र 26/06/2032	सूर्य 13/11/2048	चंद्र 01/02/2064	मंगल 13/01/2081	राहु 02/06/2097
सूर्य 01/11/2032	चंद्र 15/05/2050	मंगल 07/01/2065	राहु 20/11/2083	00/00/0000
चंद्र 02/06/2033	मंगल 02/06/2051	राहु 02/06/2067	गुरु 02/06/2086	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 6 वर्ष 0 मा 3 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - सूर्य 02/12/2025 02/06/2026	मंगल - मंगल 02/06/2026 29/10/2026	मंगल - राहु 29/10/2026 17/11/2027	मंगल - गुरु 17/11/2027 23/10/2028	मंगल - शनि 23/10/2028 02/12/2029
सूर्य 11/12/2025 चंद्र 26/12/2025 मंगल 06/01/2026 राहु 02/02/2026 गुरु 26/02/2026 शनि 27/03/2026 बुध 22/04/2026 केतु 03/05/2026 शुक्र 02/06/2026	मंगल 11/06/2026 राहु 03/07/2026 गुरु 23/07/2026 शनि 16/08/2026 बुध 06/09/2026 केतु 15/09/2026 शुक्र 09/10/2026 सूर्य 17/10/2026 चंद्र 29/10/2026	राहु 26/12/2026 गुरु 15/02/2027 शनि 17/04/2027 बुध 10/06/2027 केतु 02/07/2027 शुक्र 04/09/2027 सूर्य 24/09/2027 चंद्र 25/10/2027 मंगल 17/11/2027	गुरु 01/01/2028 शनि 24/02/2028 बुध 13/04/2028 केतु 02/05/2028 शुक्र 28/06/2028 सूर्य 15/07/2028 चंद्र 13/08/2028 मंगल 02/09/2028 राहु 23/10/2028	शनि 26/12/2028 बुध 21/02/2029 केतु 17/03/2029 शुक्र 23/05/2029 सूर्य 13/06/2029 चंद्र 16/07/2029 मंगल 09/08/2029 राहु 09/10/2029 गुरु 02/12/2029
मंगल - बुध 02/12/2029 29/11/2030	मंगल - केतु 29/11/2030 27/04/2031	मंगल - शुक्र 27/04/2031 26/06/2032	मंगल - सूर्य 26/06/2032 01/11/2032	मंगल - चंद्र 01/11/2032 02/06/2033
बुध 22/01/2030 केतु 12/02/2030 शुक्र 13/04/2030 सूर्य 01/05/2030 चंद्र 01/06/2030 मंगल 22/06/2030 राहु 15/08/2030 गुरु 02/10/2030 शनि 29/11/2030	केतु 07/12/2030 शुक्र 01/01/2031 सूर्य 09/01/2031 चंद्र 21/01/2031 मंगल 30/01/2031 राहु 21/02/2031 गुरु 13/03/2031 शनि 06/04/2031 बुध 27/04/2031	शुक्र 07/07/2031 सूर्य 28/07/2031 चंद्र 02/09/2031 मंगल 27/09/2031 राहु 30/11/2031 गुरु 25/01/2032 शनि 02/04/2032 बुध 01/06/2032 केतु 26/06/2032	सूर्य 02/07/2032 चंद्र 13/07/2032 मंगल 21/07/2032 राहु 09/08/2032 गुरु 26/08/2032 शनि 15/09/2032 बुध 03/10/2032 केतु 11/10/2032 शुक्र 01/11/2032	चंद्र 19/11/2032 मंगल 01/12/2032 राहु 02/01/2033 गुरु 30/01/2033 शनि 05/03/2033 बुध 04/04/2033 केतु 17/04/2033 शुक्र 22/05/2033 सूर्य 02/06/2033
राहु - राहु 02/06/2033 13/02/2036	राहु - गुरु 13/02/2036 09/07/2038	राहु - शनि 09/07/2038 15/05/2041	राहु - बुध 15/05/2041 02/12/2043	राहु - केतु 02/12/2043 20/12/2044
राहु 28/10/2033 गुरु 08/03/2034 शनि 12/08/2034 बुध 29/12/2034 केतु 25/02/2035 शुक्र 08/08/2035 सूर्य 26/09/2035 चंद्र 18/12/2035 मंगल 13/02/2036	गुरु 09/06/2036 शनि 26/10/2036 बुध 27/02/2037 केतु 19/04/2037 शुक्र 12/09/2037 सूर्य 26/10/2037 चंद्र 07/01/2038 मंगल 27/02/2038 राहु 09/07/2038	शनि 21/12/2038 बुध 17/05/2039 केतु 17/07/2039 शुक्र 06/01/2040 सूर्य 27/02/2040 चंद्र 24/05/2040 मंगल 24/07/2040 राहु 27/12/2040 गुरु 15/05/2041	बुध 24/09/2041 केतु 17/11/2041 शुक्र 21/04/2042 सूर्य 07/06/2042 चंद्र 23/08/2042 मंगल 17/10/2042 राहु 05/03/2043 गुरु 08/07/2043 शनि 02/12/2043	केतु 24/12/2043 शुक्र 26/02/2044 सूर्य 17/03/2044 चंद्र 17/04/2044 मंगल 10/05/2044 राहु 06/07/2044 गुरु 27/08/2044 शनि 26/10/2044 बुध 20/12/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

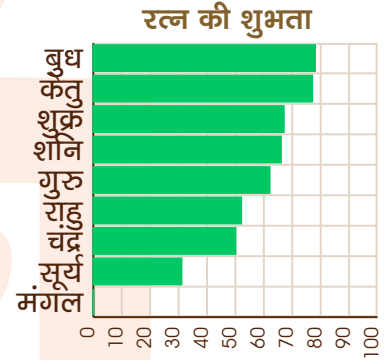
मूलांक	2
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 7, 8, 5
शत्रु अंक	4, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	78%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
लहसुनिया	केतु	77%	दम्पति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	67%	दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	66%	धनार्जन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	62%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	52%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	50%	पराक्रम, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	31%	नेष्ट भाग्य, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	02/06/1983	44%	25%	0%	91%	62%	73%	66%	52%	77%
केतु	02/06/1990	6%	25%	0%	78%	62%	73%	53%	29%	89%
शुक्र	02/06/2010	6%	25%	0%	84%	62%	80%	72%	58%	83%
सूर्य	02/06/2016	53%	56%	0%	78%	69%	55%	53%	29%	64%
चंद्र	02/06/2026	44%	62%	0%	84%	62%	67%	66%	29%	64%
मंगल	02/06/2033	44%	56%	0%	66%	69%	67%	66%	29%	83%
राहु	02/06/2051	6%	25%	0%	78%	62%	73%	72%	64%	64%
गुरु	02/06/2067	44%	56%	0%	66%	75%	55%	66%	52%	77%
शनि	02/06/2086	6%	25%	0%	84%	62%	73%	78%	58%	64%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

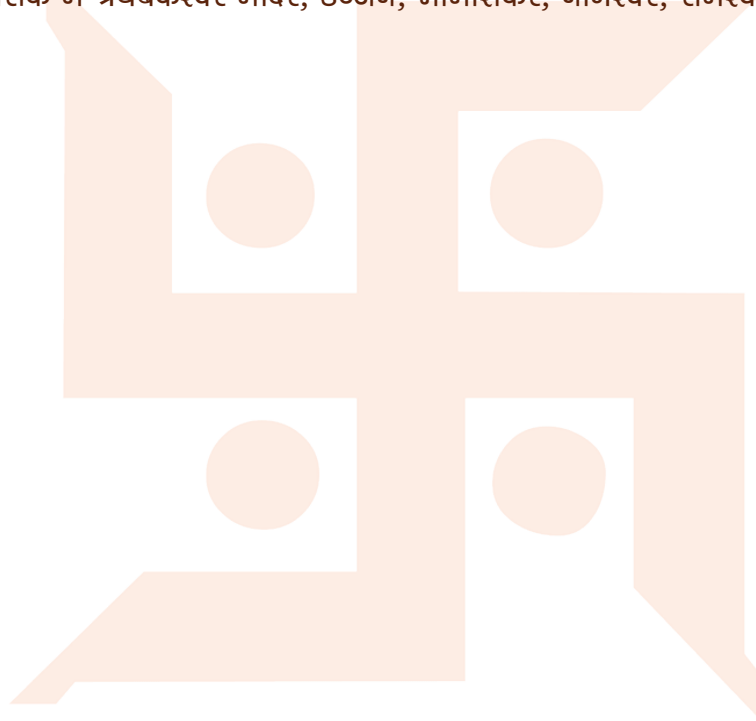
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश अष्टम् भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला

पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्चल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए उद्यत रहेंगी।

बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(02/06/2016 - 02/06/2026)**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 02/06/2016 को आरम्भ होगी और 02/06/2026 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्दपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

तृतीय भाव के स्वामी की अपने ही भाव में स्थिति आपको साहित्य, ज्योतिष और पुराणों के अध्ययन की ओर प्रवृत्त करेगी। आपकी ईध्वर में निष्ठा होगी। पत्नी से समर्थन किसी भी स्थिति में कम नहीं होगा।



**महादशा :- मंगल
(02/06/2026 - 02/06/2033)**

मंगल की महादशा को 02/06/2026 आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 02/06/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। इसके पहले आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपको लाभ, इच्छाओं की पूर्ति तथा भौतिक समृद्धि की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ और पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है तथा आपके अच्छे स्वास्थ्य की संभावना है।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवनी शक्ति और उत्साह होगा। अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप में आवश्यक कर्मशक्ति तथा ऊर्जा होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपका स्वास्थ्य एक सीमा तक प्रभावित हो सकता है। आँख तथा मूत्राशय संबंधी समस्याओं, सरदर्द, ज्वर आदि की सम्भावना है। कुछ घाव तथा चोट आ सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनोपार्जन अपने प्रयासों से करेंगे। पैतृक सम्पत्ति, तथा ट्रस्ट से आय, बोनस या अवकाश ग्रहण से लाभ की सम्भावना है। आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा। आपको कहीं से अचानक धन की प्राप्ति होगी। जीविका के लिए सशस्त्र

सैन्य सेवा, इंजीनियरिंग, सर्जरी के कार्य, लोहा-इस्पात से सम्बन्धित व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, समुद्री उत्पाद, कुटीर उद्योग आदि का व्यापार उत्तम होगा। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों की छोटी यात्राएं होंगी, उन्हें कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपका चिर प्रतीक्षित स्थानान्तरण या परिवर्तन होगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों की आय में वृद्धि होगी। हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। व्यापार में उन्नति होगी और आय में वृद्धि होगी। अप्रत्याशित परिवर्तन तथा विकास की सम्भावना है जो अन्ततः लभदायक होगा। मार्केटिंग तथा जन-सम्पर्क कौशल उत्तम होगा और आप अपने क्षेत्र में बहुत अच्छा करेंगे।

वाहन, यात्रा, सम्पत्ति :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको वाहन तथा पारिवारिक सुख मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप छोटी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लम्बी यात्राएं होंगी। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। सम्पत्ति की दृष्टि से यह एक उत्तम दशा है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकता है। विज्ञान, लेखा, र्थतिकी, गणित आदि में आपकी रुचि होगी। आपका शोध की ओर झुकाव होगा और आप इस दशा के दौरान अपनी परियोजना पूरी करेंगे। आपकी खेलों तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में रुचि होगी। उच्च शिक्षा के लिए यह दशा उत्तम है। आपका दाखिला आपकी पसन्द की संस्थाओं में होगा।

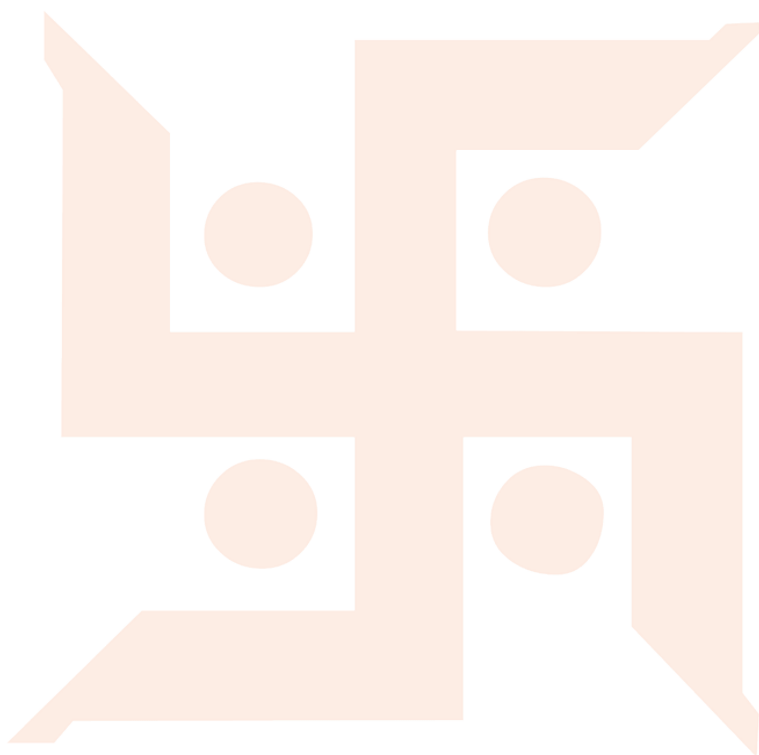
परिवार :

परिवर में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी की आय और लाभ में वृद्धि होगी। आपको आपके जीवन साथी से लाभ होगा। जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिए निवेश व सद्दा लाभदायक तथा समृद्धिदायक होगा। आपके पिता का अच्छे कार्य में व्यय होगा, उनकी यात्रा होगी और साझीदारी में लाभ मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विरोधियों पर विजय मिलेगी, कार्य स्थान में स्थिति सुधरेगी और स्वास्थ्य तथा जीवन शक्ति में सुधार होगा। आपके बड़े भाई-बहनों के कार्यों में कुछ परिवर्तन होगा। इस दशा के दौरान आप में पहलशक्ति बहुत होगी और आपका खिंचाव पर विज्ञान की ओर होगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति तथा अचानक धन की प्राप्ति होगी। इसके बाद आने वाली राहु दशा के कारण कुछ समस्याएं आएंगी। गुरु आराम व सुख देगा और आपका विवाह भी हो सकता है। शनि के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होंगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश और ख्याति, सम्पत्ति, समृद्धि, उच्च प्रतिष्ठा तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। केतु कुछ तनाव उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको आराम, विलासिता, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आपकी यात्रा

होगी जबकि सूर्य के कारण लम्बी यात्राएं होंगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा।



**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(02/06/2026 - 29/10/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 02/06/2026 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 02/06/2026 को प्रारंभ होकर 29/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी। कटु और तीखे बचनों से बचें। परिवार में शांति बनाये रखें। आपकी क्रियाशीलता बढ़ेगी; विभिन्न हॉबियों में हिस्सा लेंगे। मंगल की एकादश भाव पर दृष्टि के कारण कार्यो में सफलता मिलेगी, दबदबा बढ़ेगा। प्रगति सरलतापूर्वक होगी।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे। आपको उनसे लाभ होगा। आपके पिता के खर्च बढ़ेंगे। बेकार की यात्राएं होंगी। उन्हें धनहानि से सावधान रहना चाहिए। माता धनी बनेंगी; निवेश से लाभ होगा। भाई-बहनों की सक्रियता और जिम्मेदारी बढ़ेगी; उनके प्रतिद्वंद्वी परास्त होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा-दीक्षा उत्तम रहेगी। वे तकनीकी विषयों में खास तौर पर सफल रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो अपनी पथप्रदर्शन शक्ति का परिचय देंगे। व्यापारी और परामर्शदाता धन कमाएंगे।

उत्सर्जन तंत्र के रोग और गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(29/10/2026 - 17/11/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 02/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 29/10/2026 को प्रारंभ होकर 17/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों

को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे ; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर से सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शुत्रों से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(17/11/2027 - 23/10/2028)**

आपकी मंगल की महादशा 02/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/11/2027 को प्रारंभ होकर 23/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। मष्तिष्क का उत्थान होगा और प्रगति के अवसर आएंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। शिशु का जन्म हो सकता है। शिक्षण, लेखन और प्रकाशन के लिए समय उत्तम है। समस्याएं सुलझेंगी; शांति बहाल होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। वेद, तंत्र मंत्र आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के परिवार से मधुर संबंध रहेंगे। आपके पिता प्रगति करेंगे, स्वास्थ्य और आर्थिक स्तर उत्तम होंगे। आपके भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, आय में वृद्धि होगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित तबादला हो सकता है; साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं। व्यापारियों को अधिक परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। शरीर के निचले अंगों में कोई व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की अराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(23/10/2028 - 02/12/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 02/06/2026 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/10/2028 को प्रारंभ होकर 02/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु,

सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। धन, ज्ञान और सम्मान का संकेत है। साख उत्तम रहेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। कर्मठता, धैर्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। कुछ धन आसानी से मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को पहले किये निवेश से आय होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं होंगी; उत्साह उच्चस्तर का रहेगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं; आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है; उच्च शिक्षा, भौतिक सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों में भाग लेगी, उन्हें विरोधियों पर सफलता मिलेगी, प्रसन्न और उत्साही होंगे। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफल होंगे, चुनाव में जीत सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों और घुटनों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए पांचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(02/12/2029 - 29/11/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 02/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 02/12/2029 को प्रारंभ होकर 29/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। आपको उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपको किसी अप्रत्याशित माध्यम जैसे विरासत, उपहार आदि से धन मिल सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। अगर आप सेवानिवृत्त हो रहे हैं तो ग्रेच्युटी आदि से धनागम होगा। जीवन में सब सुख रहेंगे; उत्तम भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे। वाक्शक्ति उत्तम होगी, जिससे फायदा उठाएंगे।

आपके जीवनसाथी को हर प्रकार का लाभ होगा। आपके पिता के शुभकार्यों पर खर्च बढ़ेंगे। माता को शेयर आदि में लाभ हो सकता है। भाई-बहनों को उत्तम स्वास्थ्य, सहकर्मियों और मातहतों से सहयोग, उत्तम कार्यालय, प्रोन्नति, सम्मान और लाभ का संकेत है।

आपके संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति का

लाभ, प्रसन्नता और कार्यक्षेत्र में उन्नति का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो पत्रलेखन बढ़ेगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को हर प्रकार के लाभ होंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली खांसी, सर्दी आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(29/11/2030 - 27/04/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 02/06/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/11/2030 को प्रारंभ होकर 27/04/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। विवाह हो सकता है। आप बहुत लोगों की मदद करेंगे। कोई भी निर्णय लेने से पहले गहराई से विचार करेंगे। अध्यात्म और ज्ञानार्जन में रुचि होगी। उच्चपद मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी के सम्मान और पद में वृद्धि होगी। आपके पिता को हर प्रकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे, लोकप्रियता मिलेगी। आपकी माता को अचल संपत्ति मिल सकती है; वे प्रसन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा; मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेंगे, उनके पिता से मधुर संबंध रहेंगे।

आपकी संतान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दृढ़संकल्प का परिचय देगी। अगर से सेवारत हैं तो धनी बनेंगे, सब सुख उपलब्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ के अवसर मिलेंगे। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। उदरशूल आदि की शिकायत हो सकती है। इस पर गंभीरता से ध्यान दें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल और सतनजे का दान दें।